OUR PUBLICATIONS

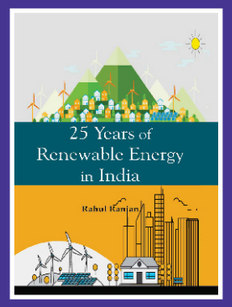

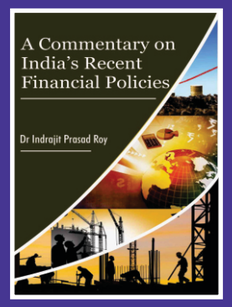

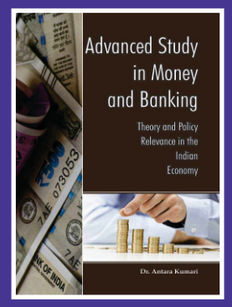

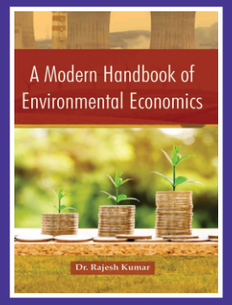

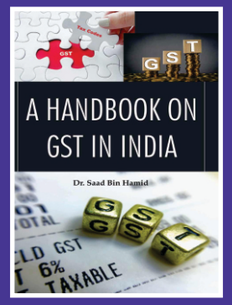

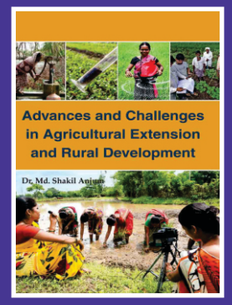

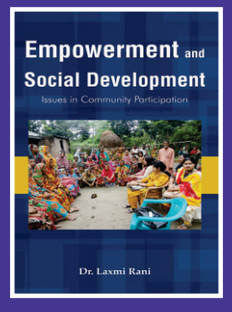

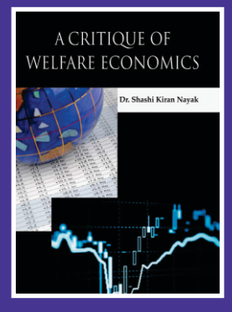

Iobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

शारंगदेव की चतु:सरणा–डॉ० दीप्ति श्रीवास्तव 5357
ग्रामीण महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं की सामाजिक स्वतंत्रता पर अध्ययन–मोहनी सिन्हा; डॉ० रजनी दिवाकर राव शिवनकर 5361
विभिन्न व्यक्तित्व प्रकार के बी० एड० प्रशिक्षार्थियों के राजनैतिक अभिरुचि का अध्ययन–श्रीमती - रेणुका त्रिपाठी; डॉ० सिद्धाधेश्वर मिश्रा 5363
महासमुन्द जिला के शालाओं में छात्राओं के अध्ययन आदतों के परिप्रेक्ष्य में शोध–हेमन्त कुमार खटकर; डॉ० रेखा नरेन्द्र जिभकाटे (नवखरे) 5366
सौरभ भट्ट के चित्रों पर आधुनिक कलाकारों का प्रभाव–डॉ० मनोज टेलर; मधु पाराशर 5370
माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन–सुमिता गुप्ता; प्रो० मधुबाला राय 5374
राम साहित्य की व्यापक संवेदना–डॉ० गणेश शंकर श्रीवास्तव 5380
नवप्रवर्तन एवं भारतीय ग्रामीण समाज: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–धर्मेन्द्र कुमार मौर्य 5383
प्राथमिक स्तर पर समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों के अभिवृत्ति का उनके समायोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन
–डॉ० मोहम्मद जाहिद; आशुतोष कुमार 5385
बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन–डॉ० सुभाष सिंह; दुर्गा शंकर 5390
प्रबलपंथ उपन्यास-पिनांकिन दवे–जादव दिव्याबेन पी० 5395
गजल में काफिया और स्वरंतकाफिया के प्रकार–पाठक नेहलबहेन अरविंदकुमार 5397
महिलाओं की आर्थिक भागीदारी, अधिकार, अवसर और स्थिति–भावेशकुमार खेमचंदभाई वाणीया 5400
पूर्णागढ़ के स्मौरको-मंझल कच्छ–पटेल मित्तलबेन जयंतीलाल 5402
कच्छ की धार्मिक स्थिति–देसाई विजयकुमार हरगोवनभाई 5404
योग के सन्दर्भित ग्रन्थों में अन्तर्निहित 'ध्यानयोग' का परिभाषात्मक स्वरूप–डॉ० लीना झा; दीपक 5406
शिक्षक शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी की भूमिका–रानी रजक 5409
मॉरीशस के प्रमुख समकालीन हिन्दी कवि–कंचन 5413
राजस्थान की लोक कलाओं में अभिव्यक्त लोक संस्कृति" ऐतिहासिक पृष्ठभमि एवं सांस्कृतिक विरासत–सविता शर्मा; डॉ० बसंत कुमार कश्यप 5416
भारत के राज्यों के असंतुलित हो रहे राजस्व का अध्ययन–दीपक शर्मा 5421
शास्त्रीय तथा लोक संगीत का विवेचनात्मक तथा तुलनात्मक अध्ययन–काजल किरण 5425
ग्रामीण भारत के विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका–बैकुंठ पाण्डेय 5427
पर्यावरण चिंतन और हिन्दी साहित्य का काव्य-जगत–सुनीता; डॉ० शिवशंकर यादव 5429
उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण नीति–डॉ० महावीर प्रसाद शर्मा 5434
ऋग्वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था: एक अध्ययन–डॉ० रिशू राज 5437
भारत में गठबंधन की राजनीति में राज्य स्तरीय दलों की भूमिका–संदीप कुमार 5441
भारतीय संविधान मे सहकारी संघवाद की चुनौती: अनुच्छेद 356 का प्रयोग–नगमा उसमानी 5445
भारत में महिला सशक्तिकरण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–राजनन्दनी कुमारी 5448
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता एंव समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन–अंकिता शर्मा; डॉ० दीप्ति जौहरी 5452
भूमंडलीकरण और हिन्दी भाषा–डॉ० ममता चावला 5457

भूमंडलीकरण और हिन्दी भाषा

डॉ० ममता चावला

शोध-सारांश-

भूमंडलीकरण के दौर में आज सम्पूर्ण विश्व एक इकाई के रूप में परिणत हो गया है। इस प्रक्रिया ने लगभग सभी राष्ट्रों धर्मों एवं भाषाओं को प्रभावित किया है। हिन्दी भाषा के स्वरूप में भी इस प्रक्रिया से महती परिवर्तन आया है। आज विश्व में जहाँ हिन्दी का व्यापक प्रचार प्रसार हो रहा है, वहीं अपने देश में हिन्दी की स्थिति चिंतनीय है। हिन्दी भाषा पर सर्वत्र अंग्रेजीयत हावी हो रही है जिसके कारण उसके भाषायी रूप में जो परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए है, यह न केवल भाषा के शुद्ध रूप को बिगाड़ रहे हैं अपितु इस बात पर भी प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं कि हिन्दी भाषा का भविष्य कैसा होगा? इस दौर में आवश्यकता इस बात की है कि हम हिन्दी को समर्थ एवं सक्षम बनाकर इस प्रकार विकसित करें कि यह भाषा भूमंडलीकरण की सभी कसौटियों पर खरी उतर सके।

भूमंडलीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है जिसके छत्र तले, मानव समाज, राष्ट्र एवं साहित्य वैश्विक इकाई के रूप में बंधे नजर आते हैं। "भूमंडलीकरण के लिए विविध शब्दों जैसे वैश्वीकरण, ग्लोबलाइजेशन, नव उपनिवेशवाद नव उदारवाद आदि शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है।"[1] भूमंडलीकरण अर्थात भूमंडल का एकीकरण, जिसमें किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का विश्व की अर्थव्यस्था के साथ एकीकरण हो जाता है। यह एकीकरण केवल आर्थिक कार्यकलापों का ही एकीकरण होता है। इस एकीकरण का भारतीय चिंतन के वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना से कोई लेना देना नहीं है।

भूमंडलीकरण वस्तुतः एक पुरानी प्रक्रिया का नया नाम कहा जा सकता है, यह प्रक्रिया यूरोप में पूँजीवाद के जन्म के साथ शुरू हुई। "इस प्रक्रिया की दो अवस्थाएँ थी पहली साम्राज्यवाद या उपनिवेशवाद की और दूसरी अवस्था उपनिवेशवाद के विघटन के बाद की है। जब पूंजीवादी देशों के लिए यह संभव हो गया कि वह दूसरे देशों में अपने उपनिवेश कायम किए बिना ही अपने साम्राज्य का विस्तार कर सके। इस दूसरी अवस्था को ही भूमंडलीकरण के रूप में देखा जाता है।"[2] इसमें पहली प्रक्रिया का सरगना ब्रिटेन था तो दूसरी प्रक्रिया का सरगना अमेरीका है भारतीय सोच 'वसुधैव कुटुम्बकम' में जहाँ धरती के रास्ते विश्व को जोड़ने की कल्पना की थी वही भूमण्डलीकरण, आकाश के रास्ते, विश्व से जोड़ने का यथार्थ है, वस्तुतः यह पूँजीवाद का नया रूप कहा जा सकता है। इसे साम्राज्यवाद का ताजातरीन और अब तक का उच्चतम चरण कहा गया है।[3]

भूमंडलीकरण ने आज विश्व को ग्लोबल विलेजश बना दिया है। जिस विलेज में एक क्षेत्र में घटित घटना का दूसरे क्षेत्र पर सार्थक प्रभाव पड़ता दिखाई देता है। अर्थव्यवस्थाएँ नजदीक आ रही हैं। विश्व व्यापार विश्व निवेश नेटवर्क का जाल इस कदर फैला हुआ है। दुनिया पुली मिली सी नजर आती है मनुष्य जीवन की गति आज बहुत बढ़ गई है। आज इंसान की अवस्था वामन भगवान की तरह हो गई है जिन्होंने समूचे ब्रह्मांड को तीन कदमों में नाप लिया था। वामन भगवान को तो कदमों से नापना पड़ा था, लेकिन आज मनुष्य को केवल फोन या क्लिक करने की जरूरत पड़ती है उसे कहीं जाना नहीं पड़ता। दुनिया स्वयं उसके लिए अपनी सेवाओं को लेकर प्रस्तुत हो जाती है। आज के दौर में एक ही वस्तु का कोई पुर्जा, कहीं बन रहा है तो दूसरा कहीं जुड़ रहा है तो, बिकने के लिए कहीं और ले जाया जा रहा है। आज नित नई-नई वस्तुओं का आविष्कार हो रहा है। नई तकनीकें आ रही है। सर्वत्र एक नवीन व्यापक वातावरण का निर्माण हो रहा है। कोई भी देश आज इस प्रक्रिया से अपने आप को अलग-थलग न रखकर परस्पर आदान-प्रदान की इस प्रक्रिया को अपनाना चाहता है।

भूमंडलीकरण की इस में प्रक्रिया में मुक्त बाजार के सिद्धान्त को अपनाया गया है। इसकी धुरी उत्पादक उपभोक्ता के आस पास ही घूमती रहती है, जिसमें 'उपभोक्ता सर्वोच्च है और उत्पादक उसे अपना सामान बेचने के लिए सभी हथकंडों को अपनाता है उसे लालायित करता है कि अमुक वस्तु के बिना उसका जीवन अधूरा है।

भूमंडलीकरण में हमें भारत भी समर्थ उत्पादक के रूप में उभरता दिखाई देता है। कॉटन, जिनेरिक दवाईयाँ, चावल, मूँगफली, सीमेंट इस्पात के उत्पादक के रूप में वह विश्व में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। दूसरी ओर भारत एक बड़ी उपभोक्तावादी संस्कृति के रूप में देखा जाता है। एक ऐसा देश जो जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में दूसरा स्थान रखता है। ऐसे में उसका विश्व बाजार के आकर्षण का केन्द्र होना स्वाभाविक ही है कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि भूमंडलीकरण वस्तुतः बाजारवाद से प्रेरित है जिसका उद्देश्य केवल धर्मोपार्जन है। वस्तुतः भूमंडलीकरण एक विशद प्रक्रिया है जिससे किसी भी देश की संस्कृति, समाज एवं भाषा प्रभावित होती है और परिस्थितियों में बदलाव आता है।

इसी बदलाव को दिनकर कुमार ने निम्न शब्दों द्वारा व्यक्त किया है-

"हमारे रसोई घर में रहने लगा है
भूमण्डलीकरण